International Journal of Applied Research 2018; 4(9): 272-274

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(9): 272-274
www.allresearchjournal.com
Received: 19-07-2018
Accepted: 25-08-2018

प्रदीप कुमार
गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रदीप कुमार
गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सामाजिक आ यथार्थवादी साहित्यकार बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

प्रदीप कुमार

सारांशः
सामाजिक आ यथार्थवादी कवि बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' जतबा भावुक हीइछ, चिन्तक ताहिसँ बेसी होइछ। ओकर भावुकता दीन–दलितक प्रति रहैछ, किन्तु ओकर दुर्दशा देखि सभसँ पहिने ओकरा मनमे समाजक ओहि वर्गक प्रति आक्रोशक भाव उदित होइछ, जे ओकर एहि दुरवस्थाक हेतु जिम्मेदार छैक। पुनः दलितक उद्धारक चिन्ता आ चिन्तक करऽ लगैछ, महन्थक आसनकें पकड़िकऽ झमारऽ लगैछ। हिनक उपन्यासमे सामाजिक विषमता, ओकर रूढ़िग्रस्तता एवं ओकरा प्रति जनसाधारणक आक्रोशक चित्रणक समस्याकें लऽकऽ पारो एवं नवतुरिया लिखल गेल। पारोमे समाधान नहि ताकल गेल अछि, परन्तु नवतुरियामे समस्या कें समाधान दुनूक सन्निवेश अछि। वस्तुतः नवतुरियामे मिथिलामे व्याप्त अनमेल विवाह, वृद्ध–विवाह एवं नारी–जातिक शोषितरूपक चित्र अंकित कऽ ओकर समाधानक चेष्टा अछि। संग–संग एहिमे मिथिलाक जीवनक चित्र अतयन्त स्वाभाविक एवं आकर्षक रूपमे अंकित भेल अछि।

प्रस्तावनाः
बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' मैथिलीक उत्कृष्ट उपन्यासकार छथि एवं हिनक प्रथम उपन्यास थिक 'पारो' एवं दोसर 'नवतुरिया'। 'पारो' में बिरजू ओ बिरजूक पिसिऔत बहिनक परस्पर आकर्षण, प्रेम ओ कोमल भावक चित्रण भेल अछि। अतः असंगत प्रेमक आक्षेपक कारणें एकर बड़ आलोचना भेल। मुदा यात्रीजी एहि प्रम। कतहु अनुचितक सीमा पर नहि पहुँचओने छथि।(1) 'नवतुरिया' मे यात्रीजी बालबृद्धविवाह तथा मिथिलाक नवतुरियालोकनिक नवजागरणक चित्रांकन कएने छथि। 60 वर्षक चतुरानन झा जखन विसेसरीक संग विवाह करबाक हेतु प्रस्तुत होइत छथि तें बूढलोकनिक अनटोटल काज नवतुरिया लोककें नहि देखल गेलैन्हि, ओ सभ केओ तकर विरोध कए बैसैत छथि तथा वाचस्पतिझाक संग विसेसरीक विवाह सम्पन्न होइत अछि। एहि प्रकार यात्रीजी 'नवतुरिया' मे समस्या ओ तकर समाधान दुनू चित्रित कएने छथि। मुदा यात्रीजीक मुख्य चमत्कार तँ समस्यामे अछि आ' ने तकर समाधान प्रस्तुत करबामे; प्रतयुत से अछि समाजक यथार्थ चित्र अंकित करबामे। पुरुष ओ स्त्री पात्रकें जाहि स्वाभाविक यथार्थताक संग यात्रीजी चित्रित कएने छथि से हुनक सामाजिक जीवनक संग सूक्ष्म परिचयक द्योतक थिक। मुदा एहि यथार्थाकनक सफलताक मूल साधन भेल अछि हिनक भाषाशैली। ई स्वाभाविक जनप्रिय लोकभाषा लिखबामे सिद्धहस्थ छथि। मुहावरा ओ लोकोक्तिक प्रयोग हिनक केहन सटीक होइत अछि, तकर हिनक प्रत्येक गद्यरचना साक्षी थिक। मुदा एहि उपन्यासमे तँ चरम सीमा पर पहुँचल अछि। हिनक 'नवतुरिया' व्यंग्यवक्रोक्ति? हास–परिहास, उषमा–उत्प्रेक्षा सब दृष्टिएँ आकर्षक अछि। परन्तु ओ जाहि समस्या पर उपन्यास लिखने छथि, से आव विगत युगक समस्या थिक। 'बलचनमा' में यात्री जी अपन ओ चमत्कार उत्पनन नहि कए सकलाह अछि, जकरा हेतु ई प्रसिद्ध छथि' कारण, भाषापरिवर्तनक संग एकर आंचलिक तत्त्व समाप्त भए गेलैक अछि, जाहि हेतु ई हिन्दी साहित्यमे झड़ प्रसिद्ध भेल छल। (2)

ज्योतिरीश्वर–विद्यापति–युगसँ अविच्छिन्न रूपें प्रवाहित होइत मैथिली–काव्यधारामे महत्त्वपूर्ण मोड़ देनिहारमे मनबोध, चन्दा झा, सीताराम झा प्रभृति अनेक महाकविक नाम लेल जाइछ, किन्तु ओकर गतिकें तीव्रतम कऽ ओकरा आधुनिक युगक कोनो अन्य समृद्ध भाषाक काव्य–प्रवाहक समानान्तर लऽ अनबाक श्रेय जाहि एकमात्र कविकें देल जाइछ, ओ थिकाह 'यात्री'क उपनामसँ सुविख्यात श्री वैद्यनाथ मिश्रा हिनक लेखनीसँ निःसृत मैथिली कविता अपन ओहन सूच्चा सुवाससँ वातावरणकें महमहा देलक जकर सुगन्ध लेबाक लेल दूर–दूरक लोक स्वतः आकृष्ट भऽगेल। वस्तुतः आकृष्ट करऽवला हिनक विलक्षण व्यक्तित्वों अछि–अपन गाम–धरक भारसँ अपनाकें सतत कात रखबाक चेष्टामे रत रहऽवला फक्कड़ व्यक्तित्वय सतत भ्रमणशील, समाज–संसारक रग–रगकें परखऽवला पारखी व्यक्तित्व; रूढ़िभंजक, श्रम–शक्तिक पूजक, व्यवस्थाक विद्रोही, नवीन पीढ़ीक प्रति आबेसी व्यक्तित्व। अपन जीवने जकाँ मैथिली कबिताकें ई संकीर्ण छन्दक बन्धनसँ मुक्त का सर्वहाराक प्रशस्त बाटपर उन्मुक्त विचरण करबाक हेतु छोड़ि देलनि।

'चित्रा' आ 'पत्रहीना नग्न गाछ' नामक दू गोट कविता–संग्रहक अतिरिक्त तीन गोट उपन्यासों हिनक प्रकाशित अछि–पारो, नवतुरिया तथा बलचनमा। एकर अलावे किछु संस्मरण, किछु सामायिक टिप्पणी, किछु शब्द चित्र, आदि अछि।

दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे सन् 1911ई.क बुद्ध पूर्णिमा दिन एक निम्नमध्यवित्त ब्राह्मण परिवारमे हिनक जन्म भेलनि। किछु दिन गाम, किछू दिन मातृक सतलखा, किछु दिन काशीमे संस्कृत साहित्यक अध्ययन कयलनि। एकर बाद बौद्ध भिक्षु भऽ गेलाह। फेर विश्वक अन्य भाषाक अध्ययन कयलनि, हिन्दीमे नागार्जुन नामे प्रगतिवादी कवि–लेखकक रूपमे अखिल भारतीय नाम–यश अर्जित कयलनि, पुनः अपन कौलिक संस्कार स्वीकार कयलनि आ मातृभाषाक भण्डारकें गुणक दृष्टिसँ अति समृद्ध कयलनि। 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर 1968ई.क साहित्य अकादमी पुरस्कार हिनका प्रान्त भेलनि।[3]

डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाक शब्दमे ''यात्रीजीक कवितामे एक विचित्र विविधताक दर्शन होयत। रूढ़ि–जर्जर एवं आत्मविश्वाससँ ग्रसित जीवन, शोषण उत्पीड़नक दारूण ज्वालामे दग्ध होइत जनताक दुःख–दर्द, समाजमे इन्तर्निहित वर्ग–संघर्षक भावना, जीवनक सरल सात्विक वर्णन, प्रकृतिक एक–सँ–एक रमनगर रूपक अतिरिक्त प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक मिथिलाक माटि–पानिकें–हरजनकें कोसी लखिमाकें नहि विसरि सकलाह अछि।'' एहि समस्त विलक्षणतासँ युक्त हिनक काव्य एक विलक्षण रूप प्राप्त कऽ लेने अछि। एहि विलक्षणताक किछु बानगी द्रष्टव्य–

कविताकें राजाप्रसाद किंवा सुखी सम्पन्नक आङन–दलानसँ उठाकऽ एक्के बेर ई गरीबक आँखिक कोर धरि पहुँचा देलनि। ई जे ''स्वप्न'' देखलनि, से आइ प्रत्यख भऽ रहल अछि–

तोर मन दौड़त छह कोठाक दिस
पैघ–पैघ धनीक दिस दरबार दिस
गरीबक दिस ककर जाइत छै नजरि
के तकै अछि हमर नोरक धार दिस
अन ने छै, कैचा ने छै, कौड़ी ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे
उठह कवि तों दहक ललकारा कने
गिरि–शिखरपर पथिक दल चढ़तेक रे[2]

सरिपहुँ, कवि तेहन ने ललकारा देलनि जाहिसँ अनेक शताब्दीसँ गरजैत राजप्रासादक गुंबज धराशायी भऽ गेल, युग–युगसँ पूजित होइत वैद्यनाथ 'पचकल लोढ़ा' बनि गेलाह, 'चामुण्डाक तरूआरि'भोथ भऽ गेल, वेद–पुरान 'फूसि' भऽ गेल। एकर विपरीत, श्रमिक वर्गमे जागृति आयल, श्रमजीवीक जयगान होबऽलागल, 'हाथ'क क्षमता 'सत्य' सिद्ध भेल।

हिनक 'चित्रा'मे तथा ओकर वादक कवितामे उक्त स्वर क्रमशः आओर अधिक मुखर भेल अछि। किन्तु, एहि प्रकारक कविताक अतिरिक्त हिनक स्वानुभूमूलिक कविता सेहो अछि जे मनोभावक सहज स्फुरणक कारणें, उपस्थापन शैलीक विलक्षणताक कारण तथा व्यक्तिगत समस्याकें सार्वभौम सत्ता प्रदान करबाक कारणें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। आचार्य रमनाथ झा एहने काव्यकें हिनक सर्वोत्कृष्ट रचना मानलनि अछि। हुनक मतक अनुसार ''ई साम्यवादी साहित्यक विवेचन ठेठ मैथिली भाषामे, बन्धनहीन छन्दमे, कएल से हिनक काव्यक वैशिष्ट्य अवश्य थिक, किन्तु यदि आओर मूल रूपें हिनक काव्य–प्रवृत्तिक विश्लेषण कयल जाय तँ हिनक कविताक ओ स्थल अतयन्त उत्कर्षपूर्ण प्रतीत होइत अछि जाहि ठाम ई अपन वादक प्रचारक व्यक्तित्वकें त्यागि अकृत्रिम भावें अपन रागात्मक अनुभूतिक अभिव्यक्ति करैत छथि। वस्तुतः यात्रीजीक ओहने चित्तवृत्तिक द्योतक रचना हिनक सर्वश्रेष्ठ रचना थिक।''[5] एहन रचनामे अग्नि प्रणाम, गामक चिट्ठी, हिमगिरिक उत्संगमे, कृतिका नक्षत्रमे, भावना, सिनुरिया आम आदि कतिपय कविताक नाम गनाओल जा सकैछ। हिनक श्अन्तिम प्रणामश्क मार्मिकता हृदयकें झकझोड़ि दैत अछि–

कर्मक फलभोगथु बूढ़ बाप
हम टा सन्तति, से हुनक पाप
ई सोचि हौन्हु जनु मनस्ताप
अनको विसरक थिक हमर नाम
माँ मिथिले ई अन्तिम प्रणाम[6]

मिथिलाकें हिनक ई प्रणाम भलें अन्तिम नहि रहल होअओ, किन्तु मैथिली रूढ़िवादी इतिवृत्तात्मक काव्यकें धरि अवश्य हिनक प्रगतिवादी कविताक अन्तिम प्रणाम सिद्ध भेलय भलें गाम–घरक लोक हिनक नाम विसरि गेल होइनि, किन्तु मैथिलीक आधुनिक कालक इतिहासमे हिनक नाम तेहन ने अमिट भऽगेल छनि जे साधारणी छात्र कथमपि ओकरा बिसरि नहि सकेछ। एक दिस ई माँ मिथिलाके अन्तिम प्रणाम करैत देखल जाइत छथि मुदा दोसर दिस स्वयंके मैथिल होयबाक कारणें गौरवान्वितो अनुभव करैत छथि, तकर कारण–

अहिंक अणु–अणुसँ भरल जें देह
अहिंक स्फूर्तिक स्पन्द जें चौतन्य
अहीं, मिथले, जें कि जन्म स्थान
जें कि मैथिल, धन्य तें हम धन्य

प्रतिपल चिन्ताक लाबापर चढ़ल मनुष्य कोना प्राकृतिक आनन्दकें छनी भरि प्राप्त करबा ले' बेहाल रहैछ, कोना ओकरा प्रकृति चुम्बक जकाँ घीचौत रहैत अछि, एहि भावक तीव्र अनुभूति 'सिनुरिया आम'क निम्नांकित पांती करबैत अछि–

किछु होअओ, भावीक चिन्ता नहि करी
एखन तँ झरकल नयनकें जुड़ा ली तत्काल
दिव्य ओ अभिराम
करै अछि आकृष्ट रहि–रहि ठाढिपर लटकल
सिनुरिया आम।

एहिमे भविष्यक चिन्ता छोड़ि सद्यःप्राप्त सुख भोगबाक तृप्तिजन्य आनन्द भेटैछ। डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' कहैत छथि–''अभिव्यक्ति–शैलीमे तँ ई क्रान्ति उपस्थित कऽदेल। मैथिली साहित्यमे हिनकहि टा भाषा यथार्थ रूपमे लोकभाषा थिक। किन्तु अपन प्रतिभाक स्पर्शसँ ओ ग्राम्य भाषाकें साहित्यिकता प्रदान कयल। हिनक रचनाकें जे सर्वाधिक मार्मिकता प्रदान करैत अछि से थिक यैह स्वाभाविक भाषाक प्रयोग ओ वक्रतापूर्ण कहबाक रीति जाहिमे व्यंग्यार्थ बेस चमत्कारक होइत अछि।''

'फोटोग्रैफिक चित्रण' आ 'चित्रा' एहि दुनू शब्दमे अद्भुत साम्य अछि, अर्थो अत्यन्त समीप अछि। हिनक 'फेकनी' यथार्थवादी कविताक बेजोड़ नमूना थिक–

छें रखसे पौआही फुच्ची दैवहिक देल
दै छही मिला तैथे अँटकरसँ पानि नित्त
बान्हल छी दू टा बूढ़ि गाय दच्छिना योग अरियानीमे
बाछी नै छौ जे रखिहें बैतरनीक हेतु
गै, क्यो नहि औतौ काज, कथी लें छें बेहाल
गै, बेटा पीवै छौ ताड़ी
सपनहुँमे नहि तों गेल हेबें
एहि जन्म सिमरिया घाट हेगै
जो भऽ आ गऽ
जिनगीक ठेकाना कोन,
आब तों सहजहिं पाकल आम भेलें,
दै छही मिला तैयो अँटकरसँ पानि नित्त।

यथार्थवादी कविताक निम्नलिखित लक्षण कहल गेल अछि

1. वक्तव्य–वस्तुक लग–पासक प्रत्येक बातक व्योरावार विवरण उपस्थित करब तथा निरघिन बूझल जायबला वस्तुक 'चऽ तू' कऽ उल्लेख करब।
2. समसामयिक घटना तथा रीति–नीतिक विस्तारपूर्वक उल्लेख करब।
3. वक्तव्य–वस्तुक संग अत्यंत क्षीण सूत्रसँ सम्बद्ध नगण्यो लोकक चर्चा करबा
4. भिन्न–भिन्न पात्रक बोलीकै हू–ब–हू उतारब तथा ओहिमे जै कोनो गारियो हो तँ ओकरा जहिनाक तहिना रहऽ देव।
5. विभिन्न व्यवसाय तथा पेशावला लोकक पारिभाषिक शब्दावलीक चुनि–चुनिकऽ संग्रह आ व्यवहार करब।
6. घटनाक सत्यताक वातावरण उपस्थित करबाक हेतु चिट्ठी, चिट्ठाय सनद एवं अन्य प्रामाणिक बूझल जायवला बातकें उपस्थित करब।(7)

हिनक 'फेकनी' मे यथार्थवादी काव्यक अधिक तत्त्वक समावेश पबैत छी। यथार्थवादी कविकें परहेज कथूसँ नहि रहैत छैक। आ, ओ निरधिन बूझल जायवला वस्तुक, घृणित वस्तुक, सामान्य मनुक्खक आँखि जकरा दिस नहिं देखऽ चाहत तेहन वस्तुक वर्णन बड़ आवेससँ, बड़ आत्मीयतासँ, बड़ फैलसँ करत। एहि संदर्भमे 'गोठबिछनी' कविताक निम्नांकित अंश देखल जा सकैछ–

मैल पुरान पचहथ्थी नूआ
सेहो फाटल चेफरी लागल
देहक रङ जमुनिया, तइपर
मुँह माइक गोटीसँ दागल
बगड़ा जेना लगाबय खोंता
तेहने रूच्छ केश छउ तोहर
दू छर हारी मात्र गराँमे
केहन विचित्र भेस छउ तोहर

एकटा आर कविता 'नव नचारी' मे एही भावक अभिव्यंजन भेल अछि–

गौरा पहिरथि फाटल नूआ
छनि कर्महिमे लागल भूआ
कार्तिक गणेशछथि गीड़ि रहल
उसिनल अगबे अल्हुआक पात
बैमान बापसँ की माङथु तऽ दालि–भात
अपने पबैत छह भोग छप्पनो परकारक
अनका लेखें तँ दुलर्भ छै आको धथूर
बूझि पड़िहुँ जें सुनितहक–
उपासल कमरथुआकेर मुइल सूर!

निष्कर्षतः कहि सकैत छी जे बैजनाथ मिश्र 'यात्री' सामाजिक आ यथार्थवादी साहित्यकार रहला। हिनक उपन्यासमे सामाजिक विषमता, ओकर रूढ़िग्रस्तता एवं ओकरा प्रति जनसाधारणक आक्रोशक चित्रणक समस्याकें लऽकऽ पारो एवं नवतुरिया लिखल गेल। पारोमे समाधान नहि ताकल गेल अछि, परन्तु नवतुरियामे समस्या कें समाधान दुनूक सन्निवेश अछि। वस्तुतः नवतुरियामे समस्या के समाधान दुनूक सन्निवेश अछि। वस्तुतः नवतुरियामे मिथिलामे व्याप्त अनमेल विवाह, वृद्ध–विवाह एवं नारी–जातिक शोषितरूपक चित्र अंकित कऽ ओकर समाधानक चेष्टा अछि। संग–संग एहिमे मिथिलाक जीवनक चित्र अतयन्त स्वाभाविक एवं आकर्षक रूपमे अंकित भेल अछि। वर्णनात्मक शैलीक प्रयोग ठेठ शब्दावलीक व्यवहार द्वारा प्रतिपादित करवामे यात्रीजीक अन्यतम स्थान छनि। हिनक दुनू उपन्यासमे वर्णनक स्वाभाविकता देखि पाठक आश्चर्य चकित भऽ जाइत छथि।

संदर्भ संकेतः

1. पारो (उपन्यास)–श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'; पृ. 40
2. नवतुरिया (उपन्यास)–श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'य पृ.–5–6
3. पत्रहीन नग्न गाछ–यात्री; यात्री प्रकाशन, पटना/इलाहाबाद–1969; पृ.–15
4. वैहय पृ.–40
5. चित्रा (भूमिका)–श्रीयात्री; अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, पृ.–21
6. समकालीन उपन्यासमे लोकजीवन आ अंतरदृष्टि–डा. नीता झा, पृ.–63
7. समकालीन उपन्यास–सं. रमानंद रेणु; पृ.–13